गीताप्रेस के चिरस्मरणीय पुरोधा : चिम्मनलाल गोस्वामी

देवर्षि कलानाथ शास्त्री
(राष्ट्रपति सम्मानित), प्रधान सम्पादक ''भारती''संस्कृत मासिक
पीठाचार्य, भाषामीमांसा एवं शास्त्रशोध पीठ - विश्वगुरुदीप आश्रम शोध संस्थान, जयपुर
पूर्व अध्यक्ष - राजस्थान संस्कृत अकादमी
आधुनिक संस्कृत पीठ - जगद्गुरु रामानन्दाचार्य राजस्थान संस्कृत विश्वविद्यालय
पूर्व निदेशक - संस्कृत शिक्षा एवं भाषा विभाग, राजस्थान सरकार
सदस्य - संस्कृत आयोग, भारत सरकार

भारतीय संस्कृति और हमारी धार्मिक परम्परा के पुनरूज्जीवन और विश्वजनित प्रसार के पुनीत कार्य में गोरखपुर स्थित गीता प्रेस का जो अमर, सर्वातिशायी और कालजयी योगदान है उसमें शिखर स्तर के हिन्दी मासिक पत्र 'कल्याण' की जो इतिहास प्रसिद्ध भूमिका है उसकी छाप तो विश्व के करोड़ो हृदयों पर अमिट है ही, उसके साथ ही इस पावन यज्ञ के पुरोधाओं के नाम भी इतिहास की यशोभूमि पर स्वर्णाक्षरों में टंकित हैं। इन पुरोधाओं में श्री जयदयाल जी गोयन्दका और हनुमानप्रसाद पोद्दार का नाम तो सर्वविदित है पर उन्हीं के साथ कन्धे से कन्धा मिला कर सांस्कृतिक सेवा करने वाले 'कल्याण कल्पतरू' नामक अंग्रेजी मासिक पत्र के सम्पादक और अनेक ग्रन्थों के लेखक और सम्पादक श्री चिम्मनलाल गोस्वामी का नाम उतना प्रसारित नहीं हो पाया। गीता प्रेस के संवर्धन में इन तीनों महापुरुषों की आधारभूत भूमिका रही थी।

गीताप्रेस सन् 1923 में स्थापित हुआ। उसका हिन्दी मासिक पत्र 'कल्याण' सन् 1926 से प्रारम्भ हुआ और उसका अंग्रेजी मासिक पत्र 'कल्याण कल्पतरू' सन् 1934 से प्रारंभ हुआ जिसके सम्पादक रहे श्री हनुमान प्रसाद पोद्दार के अभिन्न मित्र श्री चिम्मनलाल गोस्वामी जो बीकानेर नरेश के समान हिन्दी, अंग्रेजी,

संस्कृत आदि के विद्वान थे। गीता प्रेस के पुरोधाओं का यह विचार प्रारंभ से ही रहा कि हमारी सांस्कृतिक परम्परा के प्रसार के लिए हिन्दी के साथ-साथ अंग्रेजी में भी कोई मासिक पत्र होना चाहिए? उसके प्रवर्तन के लिए योग्य विद्वान् की तलाश प्रारम्भ से ही चल पड़ी थी। बीकानेर के राजसम्मानित गोस्वामी परिवार के एक युवक चिम्मनलाल गोस्वामी ने प्रारम्भ में शास्त्री परीक्षा जयपुर से उत्तीर्ण की, फिर काशी हिन्दु विश्वविद्यालय से एम. ए. परीक्षा उत्तीर्ण की। काशी में इनका संपर्क पं. गोपीनाथ कविराज से भी हुआ, प्रो. जीवनशंकर याज्ञिक से भी। अपनी प्रतिभा के कारण ये महामना मदनमोहन मालवीय के निजी सचिव भी बन गए। इसके फल स्वरूप बीकानेर में इन्हें भरपूर सम्मान मिला, वाल्टर नोबल स्कूल के प्रिंसिपल के रूप में भी इन्होंने कार्य किया।

सन् 1927 में श्री हनुमान प्रसाद पोद्दार बीकानेर प्रवास में इनसे मिले। यहाँ के सेठ गंभीरचन्द पुजारी ने जो पोद्दार जी के धर्म प्रचार मण्डली के सहयोगी थे, पोद्दार जी को इनसे मिलवाया। पोद्दार जी ने इन्हें गीता प्रेस की धार्मिक पत्रकारिता में अंग्रेजी मासिक पत्र के प्रवर्तन की अनुरोध किया। इसके फलस्वरूप कुछ समय बाद सन् 1933 में ये बीकानेर छोड़कर गोरखपुर में बस गए। यहाँ से 1934 ई. में कल्याण कल्पतरू नाम मासिक पत्र का प्रारंभ हुआ। जिसके संपादक गोस्वामी जी रहे। यह अंग्रेजी मासिक पत्र था जिसमें वरेण्य ग्रन्थों के अंग्रेजी अनुवाद भी छपते थे, धार्मिक लेख सामग्री प्रकाशित होती थी। अनेक दशकों तक, अपनी जीवन यात्रा के अन्तिम क्षण तक गोस्वमाी जी इस पत्रिका से सम्पादक रहे (संवत् 2031 तक)।

इस पत्रिका के सम्पादन के साथ साथ गोस्वामी जी ने अनेक ग्रन्थों का अंग्रेजी अनुवाद हिन्दी अनुवाद, सम्पादन आदि किया। इसीलिए गत शताब्दी में गीता प्रेस के तीन पुरोधाओं का जो स्मरण किया जाता था उसमें गोयन्दका जी, पोद्दार जी, और गोस्वामी जी का नाम सम्मिलित होता था। गोस्वामी जी के लिखे ग्रन्थों में 'श्री गीतातत्त्वविवेचनी' बहुत लोकप्रिय हुआ। इनके द्वारा भागवत और रामचरितमानस आदि ग्रन्थों का अंग्रेजी अनुवाद किया गया जिसका प्रकाशन गीताप्रेस से हुआ और जिनके कारण बीसवीं सदी के मध्य में भारत के ऐसे आधार ग्रन्थों का प्रसारण विश्वभर में हो पाया। वाल्मीकिरामायण का अनुवाद भी इन्होंने प्रारंभ किया था जो इनके अस्वास्थ्यवश पूरा नहीं हो पाया।

श्री हनुमानप्रसाद पोद्दार के निधन के बाद 'कल्याण' का सम्पादन भी कुछ समय के लिए इनके कन्धों पर आ गया। इन्हें जगन्नाथपुरी के गोवर्धनपीठ के शङ्कराचार्य पद के लिए भी प्रस्तावित किया गया था किन्तु अस्वास्थ्यवश इन्होंने स्वयं सादर उसे अस्वीकार कर दिया। इनके द्वारा जिन अनेक ग्रन्थों का सम्पादन किया गया था उनमें जयपुर के मूर्धन्य मनीषी सुप्रसिद्ध कविशिरोमणि भट्ट श्री मथुरानाथशास्त्री का संस्कृत काव्य 'गोविन्दवैभवम्' (हिन्दी अनुवाद सहित) सन् 1961 में प्रकाशित हुआ। भट्ट जी का एक अन्य ग्रन्थ 'शरणागतिरहस्य' सन् 1953 से पूर्व प्रकाशित हो गया था।

राजस्थान के इस मूर्धन्य मनीषी ने अपनी जीवनयात्रा का अधिकांश काल गोरखपुर में रहते हुए गीताप्रेस की सांस्कृतिक साधना को समर्पित कर अपने जीवन को सफल बनाया। प्रशस्ति या प्रचार की ललक से दूर विद्वत्प्रवर श्री चिम्मनलाल गोस्वामी गीताप्रेस के इतिहास से जुड़ी एक चिरस्मरणीय विभूति हैं जिनकी जीवन संगिनी अवश्य उनके साथ रही किन्तु किसी सन्तान को उन्होंने जन्म नहीं दिया। गोस्वामी का जन्म संवत् 1957 में बीकानेर में हुआ था और मृत्यु संवत् 2031 में गोरखपुर में हुई। इस प्रकार लगभग 74 वर्ष की जीवनयात्रा द्वारा इन्होंने भारतीय संस्कृति की जो निःस्वार्थ सेवा की वह इतिहास में अमर रहेगी।